Sociology of Religion-Weber
DSE 01
SOCIOLOGY OF RELIGION

Dr. Utpal Kumar Chakraborty
Department of Sociology
ABM College, Jamshedpur

प्रोटेस्टेंट आचार और पूँजीवाद का विकास

Protestant Ethics and Rise of Capitalism

मैक्स वेबर ने विश्व के छह महान धर्मों को चुन लिया है। वे धर्म हैं–कन्फ्यूशियन, हिन्दू, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम तथा यहूदी धर्म। **वेबर** ने इसमें से प्रत्येक धर्म के आर्थिक आचारों का विश्लेषण किया, और फिर उन आचारों के, उस धर्म-विशेष को मानने वाले लोगों के आर्थिक तथा सामाजिक संगठन पर पड़ने वाले प्रभावों को सिद्ध किया। इस विषय में **मैक्स वेबर** का अधिक महत्त्वपूर्ण तथा परिपक्व सामान्य निष्कर्ष उनकी सर्वाधिक प्रख्यात रचना **दी प्रोटेस्टेण्ट इथिक एण्ड दी स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म** (*The Protestant Ethic and the Spirit of Capitalism*) में मिलता है। इसमें आपने प्रोटेस्टेण्ट धर्म और पूँजीवाद के सम्बन्ध को विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया है। आपके मतानुसार प्रोटेस्टेण्ट धर्म में कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जबकि उन आर्थिक नियमों की व्यवस्था को उत्पन्न करने में सहायक हुईं जिसे कि हम पूँजीवाद कहते हैं; और यह प्रोटेस्टेण्ट ही था जिसने एक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के विकास में प्रत्यक्ष प्रेरणा प्रदान की। परन्तु इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं कि प्रोटेस्टेण्ट धर्म एकमात्र कारक है। **वेबर** ने सदा एक बात का बल दिया कि आधुनिक पूँजीवाद के विकास के लिए अनेक परस्पर स्वतंत्र अवस्थाएँ आवश्यक थीं। फिर भी आपने उतनी ही निश्चितता और दृढ़ता से यह भी कहा कि प्रोटेस्टेण्ट आचार एक आवश्यक कारक था और इसके बिना पूँजीवाद का विकास सर्वथा भिन्न होता।

प्रोटेस्टेण्ट धर्म और पूँजीवाद के उक्त सम्बन्ध को प्रमाणित करने के लिए **वेबर** ने इन दोनों के 'आदर्श-प्रारूपों' को चुना है। आधुनिक पूँजीवाद के विशिष्ट लक्षण इस प्रकार हैं—इस अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत उद्योग, व्यापार और वाणिज्य बड़े पैमाने में बिल्कुल वैज्ञानिक आधारों पर विवेकपूर्ण ढंग से संगठित तथा संचालित होता है; निजी सम्पत्ति सम्पूर्ण व्यवस्था का सर्वप्रथम अंग होता है; उत्पादन का कार्य बड़ी-बड़ी मिल तथा फैक्ट्री में अधिक लोगों की सहायता से मशीनों द्वारा होता है; और इस प्रकार से उत्पादित वस्तुओं की संगठित विक्रय-व्यवस्था की जाती है; अधिकतम कार्यकुशलता के लिए श्रम-विभाजन तथा विशेषीकरण पर अधिक बल दिया जाता है; और सर्वप्रमुख उद्देश्य अधिकतम लाभ प्राप्त करना होता है। पूँजीवाद व्यवस्था में कार्य ही जीवन तथा कुशलता ही धन है। प्रत्येक

व्यक्ति को अधिकतम उत्साह तथा प्रधिकतम कुशलता के साथ कार्य करना पड़ता है। इस व्यवस्था में जोखिम अधिक होता है, इस कारण इसमें व्यक्ति में आत्मविश्वास, कर्त्तव्यपरायणता तथा अपने व्यवसाय के प्रति पूरी निष्ठा होनी चाहिए। इसे ही 'व्यावसायिक आचार' कहा जाता है। जो व्यक्ति अपने कार्य या व्यवसाय में कुशल हैं, वे धन और मान दोनों को ही पाते हैं; और जिनमें कार्यकुशलता कम होती है, वे धन और मान दोनों से ही वंचित रहते हैं। पूँजीवादी व्यवस्था में जो कुछ अकुशल और पुराना है, उसका पतन अनिवार्य है। संक्षेप में, यही पूँजीवाद का प्रमुख तत्व है।

परन्तु यहाँ प्रश्न यह है कि वह कौन-सी शक्ति है जोकि इस प्रकार की आर्थिक व्यवस्था को सम्भव बनाती है तथा उसे स्थिर रखती है? यह शक्ति, **वेबर** के अनुसार, प्रोटेस्टेण्ट धर्म का आर्थिक आचार है। पूँजीवादी व्यवस्था को बनाए रखने के लिए व्यक्ति के द्वारा जिन आचरणों को किया जाना आवश्यक है उनके सम्बन्ध में लोगों को अनेक उपदेश प्रोटेस्टेण्ट धर्म से प्रभावित सामाजिक नेताओं से प्राप्त होते हैं।

उपदेश प्रोटेस्टेण्ट धर्म से प्रभावित सामाजिक नेताओं से प्राप्त होते हैं। उदाहरणार्थ, **बेंजामिन फ्रेंकलिन** ने, जोकि आधुनिक पूँजीवाद के मूल सिद्धांतों के प्रारम्भिक प्रतिपादक माने जाते हैं, अपनी आत्मकथा में आपने अनेक उपदेश उन लोगों को दिए हैं जोकि व्यवसाय में सफल होना या धनी होना चाहते हैं। ये उपदेश प्रोटेस्टेण्ट आचारों द्वारा प्रभावित और बहुत-कुछ उनके अनुरूप हैं। इन उपदेशों में कुछ उपदेश इस प्रकार हैं–'समय ही धन है', 'धन से धन कमाया जाता है', 'एक पैसा बचाना एक पैसा कमाना', 'ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है', 'जल्दी सोना और जल्दी उठना व्यक्ति को स्वस्थ, धनी और बुद्धिमान बनाता है।'

यदि हम इन समस्त उपदेशों के पीछे छिपे मनोभावों पर ध्यान दें तो हम स्पष्टतया यह पाएँगे कि ये सभी निर्देश एक विशेष बात पर विशेष बल देते हैं और वह यह है कि 'कार्य करना ही सबसे बड़ा गुण है' और इस कारण हमें कम-से-कम इतना बुद्धिमान होना चाहिए कि हम कठोर परिश्रम करें और धन को कमाएँ और बचाएँ, ताकि हम स्वस्थ और धनी हो सकें। इस प्रकार के मूल सिद्धांतों या मनोभावों के बिना आधुनिक पूँजीवाद कदापि सम्भव न होता। यह मूल सिद्धांत, जैसाकि निम्नलिखित विवेचना से स्पष्ट होगा, प्रोटेस्टेण्ट धर्म से लोगों को प्राप्त होता है। पूँजीवाद के विकास में प्रोटेस्टेण्ट धर्म के आचारों का प्रभाव निम्नवत् है–

1. **पहला,** 'काम करना ही सबसे बड़ा गुण है', यह एक प्रोटेस्टेण्ट आचार है। कैथोलिक आचार में इस प्रकार का कोई विचार नहीं पाया जाता है। कैथोलिक धर्म में प्रचलित एक गाथा से यह बात स्पष्टतया प्रमाणित होती है। गाथा इस प्रकार है कि आदम तथा ईव ने स्वर्ग में अच्छे और बुरे ज्ञान के वृक्ष के फलों को खा लिया था; इस अपराध के दंडस्वरूप ईश्वर ने उन दोनों का स्वर्ग से बहिष्कार कर दिया और उन्हें यह दंड दिया कि अब से ईव और उसकी कन्याएँ कष्ट से बच्चे को जन्म देंगी और आदम और उनके पुत्रों को एड़ी-चोटी का पसीना एक करके रोटी कमानी होगी। अत: स्पष्ट है कि कैथोलिक आचार में श्रम एक गुण नहीं, बल्कि एक दंड है। इसके विपरीत प्रोटेस्टेण्ट आचार में कार्य ऐसी क्रिया या आचरण है जिसे कि करना उचित है, और स्वयं कार्य के लिए ही कार्य करना चाहिए। 'कर्म ही पूजा है' या 'परिश्रम से ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है',–ये आचार प्रोटेस्टेण्ट धर्म के ही हैं, और इनकी बहुत बड़ी देन पूँजीवाद के विकास में है।

2. **प्रोटेस्टेण्ट** धर्म की **दूसरी,** देन, जोकि पूँजीवाद के विकास में सहायक सिद्ध हुई है, 'व्यावसायिक आचार' है। इसका सम्बन्ध उस विश्वास से है जिसे कैलविनवाद कहा जाता है और जिसके अनुसार प्रत्येक आत्मा व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् या तो स्वर्ग या नरक में चली जाती है, और व्यक्ति के जीवन-काल में कोई भी कार्य उसके भाग्य को बदल नहीं सकता। परन्तु उसके जीवन-काल में कुछ इस प्रकार के लक्षण प्रकट होते हैं जोकि उसे पहले से ही यह संकेत कर सकते हैं कि उसकी आत्मा स्वर्ग में जाएगी या नरक में? यदि एक व्यक्ति अपने कार्य या व्यवसाय में अधिकाधिक सफलता प्राप्त करता है, तो वह इस बात का संकेत है कि उनकी आत्मा स्वर्ग को जाएगी। इन विश्वास के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति पर एक नैतिक दबाव इस रूप में डाला जाता है कि वह अपने पेशे व व्यवसाय में कठोर परिश्रम करे और उसके प्रति पूर्ण निष्ठा बरते ताकि उसे अधिकाधिक सफलता प्राप्त हो सके। अपने कार्य

अपने कार्य को भली प्रकार तथा सफलतापूर्वक करना ईश्वरीय इच्छा का ही गुण-कीर्तन करना है। केवल गिरजाघर जाने या तीर्थ-यात्रा करने से ही मुक्ति नहीं मिलती; मुक्ति तो अपने कर्मों या व्यवसायों को उचित ढंग से करने से ही मिल सकती है। एक व्यक्ति अपने धार्मिक कर्त्तव्यों का पालन केवल गिरजाघर में ही नहीं, बाजारों में भी कर सकता है। यह प्रोटेस्टेण्ट आचार पूँजीवाद के विकास में अत्यधिक सहायक अवश्य ही सिद्ध हुआ है क्योंकि पूँजीवाद की सफलता और विकास इसी बात पर निर्भर है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अधिकतम उत्साह और निष्ठा के साथ काम करे।

3. पूँजीवाद को प्रोटेस्टेण्ट धर्म की **तीसरी** देन यह है कि इस धर्म के अन्तर्गत ऋण पर सूद वसूल करने की मान्यता या स्वीकृति है। जैसाकि पहले कहा जा चुका है, **बेंजामिन फ्रेंकलिन** के अनुसार, 'धन से धन कमाया जाता है।' इसका स्पष्ट अर्थ यह हुआ कि अपने धन का विनियोग धन, जिसमें कि सूद के रूप में प्राप्त धन भी सम्मिलित है, कमाने के लिए किया जा सकता है। कैथोलिक धर्म में सूद लेना बुरा समझा जाता है; इसके विपरीत, प्रोटेस्टेण्ट धर्म में इस प्रकार सूद लेने की स्वीकृति है। अत: धन को खुलेआम बिना किसी ईश्वरीय दंड या कोप के भय से धन कमाने या सूद एकत्रित करने के लिए लगाया जा सकता है। ये सभी बातें पूँजीवाद के विकास में सहायक सिद्ध हुई हैं।

4. प्रोटेस्टेण्ट धर्म की पूँजीवाद के विकास में **चौथी** देन यह है कि इस धर्म ने शराबखोरी को बुरा बताया और ईमानदारी को ऊँचा पद प्रदान किया। इस धार्मिक आचार के परिणामस्वरूप लोगों में शराब पीकर आलसीपन करने की प्रवृत्ति घटती गई और उनकी कुशलता बढ़ी। शराबखोरी पर प्रतिबंध पूँजीवादी आर्थिक व्यवस्था में अत्यन्त महत्त्व इस कारण है कि इसके अन्तर्गत लोगों को मशीन पर काम करना पड़ता है। शराब पीकर हल चलाया जा सकता है, पशुओं को चराया जा सकता है, पर मशीन चलाना कठिन होता, और ऐसा करना सम्भव होने पर भी जान-माल का खतरा होगा।

5. प्रोटेस्टेण्ट आचार का पूँजीवाद के विकास में अन्तिम प्रभाव इस रूप में है कि वह कैथोलिक आचार की भाँति अधिक छुट्टी के पक्ष में नहीं है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्रोटेस्टेण्ट धर्म और उसका आर्थिक आचार वह प्रभावशाली शक्ति है जोकि पूँजीवाद के विकास में प्रमुख कारक रही है, परन्तु जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि प्रोटेस्टेण्ट आचार पूँजीवाद के विकास में एकमात्र कारक है। अन्य अनेक कारकों का भी योग इस दिशा में अवश्य रहा होगा। इस अर्थ में **मैक्स वेबर** को एक-कारकवादी नहीं, बल्कि बहु-कारकवादी माना जा सकता है।

वेबर ने पूँजीवाद तथा प्रोटेस्टेण्ट आचारों के बीच सम्बन्ध को स्पष्ट करने के लिए अनेक ऐतिहासिक प्रमाणों को प्रस्तुत किया है। आपने यह दर्शाया है कि पूँजीवाद का सर्वोत्तम विकास, इंग्लैण्ड, अमेरिका, हालैंड आदि उन देशों में हुआ है जहाँ कि लोग प्रोटेस्टेण्ट धर्म के अनुयायी हैं। इसके विपरीत, इटली, स्पेन आदि देशों के लोग कैथालिक धर्म के अनुयायी होने के कारण पूँजीवाद को अधिक विकसित नहीं कर पाए हैं। इसी प्रकार **मैक्स वेबर** ने और भी अनेक प्रमाण ऐसे दिए हैं जिनसे इस सिद्धांत की पुष्टि हो सके कि आधुनिक पूँजीवाद प्रोटेस्टेण्ट धर्म से अत्यधिक प्रभावित हुआ है। यद्यपि यह धर्म पूँजीवाद की उत्पत्ति और विकास में एकमात्र कारक नहीं है, फिर भी सबसे अधिक प्रभावशाली कारक या शक्ति अवश्य ही रहा है।

वेबर का निष्कर्ष यह है कि प्रोटेस्टेण्ट धर्म में ऐसे अनेक आर्थिक आचारों का समावेश है जिनका कि पर्याप्त प्रभाव पूँजीवाद के विकास पर पड़ा है। इनमें से पाँच प्रमुख प्रभावों की विवेचना हम ऊपर कर चुके हैं। **वेबर** का कथन है कि यद्यपि पूँजीवाद के विकास में प्रोटेस्टेण्ट धर्म के आधार ही एकमात्र कारण नहीं हैं, फिर भी इनके बिना आधुनिक पूँजीवाद का विकास उस सीमा तक सम्भव न था जैसाकि आज हम देख रहे हैं। पूँजीवाद का सर्वोत्तम विकास प्रोटेस्टेण्ट देशों में ही हुआ है।